This question paper contains 3 printed pages.

M.A. (Sem. - I)

000070 Roll No. 67/8176

HIN-101

Hin. I

M.A. Hindi (Semester - I) EXAMINATION - Dec. 2025

HINDI

Paper Code: HIN-101

(प्राचीन काव्य)

Time Allowed: Three Hours

Maximum Marks: 100

सभी (लघुत्तरात्मक तथा वर्णनात्मक) प्रश्नों के उत्तर मुख्य उत्तर–पुस्तिका में ही लिखें। लघुत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर प्रश्नों के क्रमानुसार ही दें। इसी प्रकार किसी भी एक वर्णनात्मक प्रश्न के अन्तर्गत पूछे गए विभिन्न प्रश्नों के उत्तर, उत्तर–पुस्तिका में अलग–अलग स्थानों पर हल करने के बजाय एक ही स्थान पर क्रमानुसार हल करें।

सूचनाः प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न–पत्र पर रोल नम्बर अवश्य लिखें। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

भाग – अ

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– 10x4=40

(क) ए सखि पेखलि एक अपरूप।
सुनइत मानधि सपन – सरूप।।
कमल जुगल पर चाँद क माला।
तापर उपजल तरून तमाला।।
तापर बेड़लि बिजुरी – लता।
कालिन्दी तट धीरे चली जाता।।
सात्रा – सिखर सुधाकर पाँति।
ताहि नव – पल्लव अरूनक भाँति।।

अथवा

जाइत देखलि पथ नागरि सजनि गे
आगरि सुबुधि सेयानि।
कनक – लता सनि सुन्दरि सजनि गे
विहि निरमाओल आनि।।
हात्ति गमन जकाँ चलइत सजनि गे
देखइत राज – कुमारि।
जिनकर पहनि सोहागिनि सजनि गे
पाओल पदारथ चारि।।

(ख) जिम जिम मन अमले किअइ, तार चढ़ती जाइ।
तिम तिम मारवणी तणई, तन तरणापउ थाइ।।
हंस चलण कदळोह जंघ, कटि केहर जिम खीण।
मुख सिसहर खंजर नयण, कुच श्रीफल, कंठ वीण।।

अथवा

अंब तजइ नहिं कोइला, सरवर सालूराह।
राज हिवइ मा पॉतरउ, आ घण अवरॉह।।
ज्युँ थे जाणउ त्यूँ करउ, राजा आइस दीघ।
राणी राजानूँ कहइ, ओ म्हाँ नातरउ कीघ।।

(ग) बसती न सुन्य सुन्य न बसती अगम अगोचर ऐसा।
गगन सिखर महिं बालक बोलै ताका नाँव धरहुगे कैसा।।
अदेखि देखिबा देखि बिचारिबा अदिसिटि राखिबा चीया।
पाताल की गंगा ब्रह्मंड चढ़ाइबा, तहाँ बिमल बिमल जल पीया।।

अथवा

चारि पहर आलंगन निंद्रा संसार जाइ विषिया वाही।
ऊभी बाँह गोरखनाथ पुकारै मूल म हारौ म्हारा भाई।
अमावस पड़िवा मन घट सूंनां, सूंनां ते मंगलवारे।
भणता गुंणता ब्रह्मण वेद बिचारै, दसमी दोष निवारै।।

(घ) पत्त पुरातन ह्यरिग। पत्त अंकुरिय उट्ठ तुछ।।
ज्यौं सैसव उत्तरिय। चढ़िय वैसब किसोर कुछ।।
शीतल मंद सुगंध। आइ रितिराज अचानं।।
रोमराइ अंग कुच नितंब। तुच्छं सरसानं।।
बढ़्ढ़ैन सीत कटि छीन ह्वै। लज्ज मान ढंकति फिरै।।
ढके न पत ढंकै कहै। बन बसंत मंत जु करै।।

अथवा

वय संधिरू बाल प्रमान ब्रनं। कहि त्रोटक छंद प्रमान सुनं।।
वय स्यामडरू शैशव अंकुरय। अह अंत निसागम संकरय।।
जल सैसव मुद्ध समानं भय। रबि बाल बहिक्रम अत्थमिय।।
वर सैसव जोबन संधि अती। सु मिले जनु षित्तह बाल जती।।
जु रही लगि सैसव जुब्बनता। सु मनो ससिर तन राज हिता।।
जु चलै मुरि मारूत ह्यंकुरिता। सु मनो मुखैस मुरी मुरिता।।

2. 'शशिव्रता विवाह प्रस्ताव' के काव्य सौष्ठव को स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

'पृथ्वीराज रासो' महाकाव्य की प्रामाणिकता व अप्रमाणिकता पर विचार प्रकट कीजिए।

3. विद्यापति कृत 'पदावली' की काव्यगत विशेषताओं को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

'विद्यापति भक्त कवि हैं या श्रृंगारी कवि' – विविध विद्वानों के मतों के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

4. गोरखनाथ की दार्शनिक मान्यताओं पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

नाथ – साहित्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

5. 'ढोला मारू रा दूहा' विप्रलम्भ श्रृंगार की उत्कृष्ट काव्य कृति है।' कथन की समीक्षा कीजिए। 15

अथवा

'ढोला मारू रा दूहा' काव्य कृति की भाषा और संवेदना पर अपने विचार प्रकट कीजिए।